B - IV
L - 32
MIH

खिलाफत आन्दोलन

गतिविधियाँ :-

- 1919 में खिलाफत समिति का गठन किया गया इसके प्रमुख नेता थे - अली बंधु
  - मोहम्मद अली
  - शौकत अली

  हसरत मोहानी, हकीम अजमल खाँ, मौलाना आजाद
- इस समिति ने अपनी माँगों से भारतीय एवं ब्रिटिश सरकार को अवगत कराया।
- इन माँगो के सन्दर्भ में भारत में जागरूकता अभियान चलाया।
- मई 1920 में तुर्की के साथ की गई सन्धी की शर्तें प्रकाशित हुई इससे आन्दोलन-कारियों को निराशा हुई।
- इलाहाबाद में एक सम्मेलन बुलाया गया और खिलाफत समिति के द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया (1 अगस्त 1920 से)
- गाँधी जी खिलाफत आन्दोलनकारियों को समर्थन दे रहे थे और वे चाहते थे

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

की कांग्रेस के मंच से भी आन्दोलन की शुरुआत की जाए साथ ही गांधी जी खिलाफत आन्दोलन को हिन्दू-मुस्लिम एकता को मजबूत करने वाली कड़ी के रूप में भी देख रहे थे।

कांग्रेस एवं असहयोग आन्दोलन

- सितम्बर 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन। अध्यक्ष ⇒ लाला लाजपत राय
- इस अधिवेशन में असहयोग संबंधी प्रस्ताव पारित हुआ लेकिन अन्तिम निर्णय वार्षिक अधिवेशन पर छोड़ा गया।
- इस प्रस्ताव के कुछ बिन्दुओं का एनी बेसेंट, चितरंजन दास, लाजपत राय इत्यादि ने विरोध किया।
- दिसम्बर 1920 - नागपुर अधिवेशन अध्यक्ष - सी. राघवाचारी
- सी. आर दास ने असहयोग संबंधी प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव के दो बिन्दु हैं- विरोधात्मक, रचनात्मक

विरोधात्मक :-

- अदालत शैक्षणिक संस्थाएं, विधान मण्डल, प्रशासनिक कार्यालय, ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार इत्यादि।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

रचनात्मक :-

- छुआछूत का विरोध, हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल, स्वच्छता अभियान, महिलाओं की दशा में सुधार, चरखा का आधिकाधिक प्रयोग इत्यादि।
- कांग्रेस के संगठनात्मक ढांचे में भी गांधी जी के प्रयासों से व्यापक परिवर्तन हुआ -

(i) 15 सदस्यीय कांग्रेस वर्किंग समिति बनायी गई।

(ii) 350 सदस्यीय ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी (AICC) का गठन।

(iii) केन्द्र से लेकर ग्रामीण स्तर तक पदसोपान बनाया गया।

(iv) सदस्यता शुल्क के लिए 15 पैसे निर्धारित किए गए।

(v) जहाँ तक संभव हो कांग्रेस हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में उपयोग करेगी और प्रांतीय कांग्रेस समितियों क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग करेगी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

असहयोग आन्दोलन (1920 - 1922)

कारण :-

- तात्कालिक कारण था रालेट एक्ट, जलियांवाला बाग हत्याकांड एवं खिलाफत के मुद्दे को लेकर असंतोष।
- हालांकि आन्दोलन की परिस्थितियों लम्बे समय से निर्मित हो रही थी जैसे- होमरूल-आन्दोलन, लखनऊ पैक्ट, नरम एवं गरम दल के बीच एकता से राजनीतिक कार्यकर्ताओं में एक उत्साह था।
- प्रथम विश्वयुद्ध के कारण आम लोगों की कठिनाईयां बढ़ी जैसे मंहगाई में वृद्धि हुई युद्ध के पश्चात बेरोजगारों की संख्या भी बढ़ी।
- राष्ट्रीय नेतृत्व एवं सरकार के बीच संवैधानिक मुद्दों को लेकर भी गतिरोध बना हुआ था और 1919 के अधिनियम से भी असंतोष था।
- खिलाफत के मुद्दे पर आखिल भारतीय स्तर पर आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था और इसी पृष्ठभूमि में कांग्रेस के द्वारा एक असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

असहयोग आन्दोलन की विशेषताएँ :-

प्रसार :-

- स्वदेशी आन्दोलन की तरह ही असहयोग आन्दोलन का प्रसार अखिल भारतीय स्तर पर शहरों में तो था ही इसके साथ-साथ ग्रामीण भारत में इसका व्यापक प्रसार हुआ।
- इस आन्दोलन का प्रभाव देशी रियासतों पर भी दिखा, रियासतों में भी राष्ट्रीय चेतना का प्रसार तथा राजनीतिक जागरूकता दिखाई पड़ने लगी।

सामाजिक आधार :-

- स्वदेशी आन्दोलन की तुलना में महिलाओं, छात्रों एवं मजदूरों की व्यापक भागीदारी देखी गई।
- बड़ी संख्या में किसानों एवं मुस्लिम संप्रदाय के लोगों ने आन्दोलन में भाग लिया। भारतीय पूँजीपतियों के एक वर्ग ने आन्दोलन को समर्थन दिया आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल इत्यादि क्षेत्रों में जनजातीय समाज की भी आन्दोलन में भागीदारी दिखी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

नोट :- • असहयोग आन्दोलन विरोध समिति कुछ पूँजीपतियों के द्वारा बनायी गई।
जैसे - द्वारकादास, फिरोज सेठना इत्यादि

लक्ष्य :- गांधी जी ने एक वर्ष के भीतर प्रत्येक शान्तिपूर्ण एवं उचित साधनों के माध्यम से स्वराज की प्राप्ति को लक्ष्य निर्धारित किया (स्वराज को परिभाषित नहीं किया गया था)

संगठित :- स्वदेशी की तुलना में यह अधिक संगठित था। कार्यक्रम (विरोधात्मक, रचनात्मक) आन्दोलन को अहिंसात्मक रखने पर बल, एक संगठन के रूप में कांग्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका, गांधी जी के द्वारा आन्दोलन का नेतृत्व इत्यादि तथ्य इसके संगठित स्वरूप को अभिव्यक्ति करते हैं।

• इसी के साथ-साथ आन्दोलन को प्रारम्भ करने एवं वापस लेने की घोषणा, आवश्यकता पड़ने पर सरकार से बातचीत तथा परिस्थितियों के अनुसार नए-नए मुद्दों को भी आन्दोलन में महत्व देना जैसी विशेषताएँ भी इस आन्दोलन में देख सकते हैं।

उदाहरण :- गांधी जी एवं वायसराय रीडिंग के बीच मालदीप जी के प्रयासों से वर्ष 1921 में वार्ता हुई

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
A Trusted Learning Platform
KHAN SIR

लेकिन सफलता नही मिली।

- आन्दोलन के दौरान ही तिलक स्वराज फंड के लिए एक करोड़ रूपया जमा करने का लक्ष्य रखा गया और यह सफल रहा।
- पंजाब में अकाली आन्दोलन एवं बिहार में ताड़ी के दुकानों पर धरना को भी कांग्रेसी नेताओं ने समर्थन दिया जबकि ये मूल कार्यक्रम में शामिल नही थे।

नोट :- उपर के दोनों पैराग्राफ गांधीवादी आन्दोलन की भी महत्वपूर्ण विशेषता है।

- कार्यक्रम में विरोधात्मक के साथ-साथ रचनात्मक कार्यक्रम को भी विशेष महत्व दिया गया इसके पीछे गांधी जी की एक दूरगामी सोंच थी। जैसे सामाजिक कुरीतियों पर प्रभाव कर राष्ट्रीय एकता, आत्मनिर्भरता, विरोधात्मक आन्दोलन वापस लेने के पश्चात भी आन्दोलन को निरंतरता प्रदान करना इत्यादि।
- आन्दोलन को प्रत्येक स्थिति में अहिंसात्मक रखने पर बल, व्यक्तिगत तौर पर गांधी जी की अहिंसा पर आस्था तो थी लेकिन एक रणनीति के रूप में भी गांधी जी इसे देखते थे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अहिंसात्मक आन्दोलन के कारण लोगों की भागीदारी बढ़ती गई और निहत्थे लोगों पर या अहिंसात्मक आन्दोलन का सरकार दमन करती है तो इससे सरकार की छवि भी कमजोर होगी।

- गांधीवादी रणनीति अर्थात जन आन्दोलन को लम्बे समय तक नही चलाना है एवं सरकार की दमनकारी नीतियों को देखते हुए गांधीजी ने आन्दोलन को वापस लिया। हालांकि इस आन्दोलन ने राष्ट्रीय आन्दोलन को नई ऊँचाई पर पहुँचाया।

Note:-

- 5 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश के चौरी-चौरा नामक स्थान पर पुलिस एवं आम लोगों में हिंसक झड़प हुई और हिंसा को देखते हुए गांधीजी ने आन्दोलन को वापस ले लिया।
- गांधी जी ने 16 फरवरी 1922 को सरकार को चेतावनी दी की यदि एक सप्ताह के भीतर राजनीतिक बंदियों को रिहा किया गया तो गांधी जी गुजरात के बारदोली नामक स्थान से सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत करेंगे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

- 12 फरवरी 1922 को बारदोली प्रस्ताव पारित किया गया और आन्दोलन को वापस लेने की घोषणा की गयी।
- आन्दोलन के दौरान कुछ शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना हुई जैसे- काशी, गुजरात, बिहार विद्यापीठ, जामिया मिलिया इस्लामिया इत्यादि।
- बड़ी संख्या में नेताओं ने वकालत छोड़ दी राजेन्द्र प्रसाद, आसफ अली, राजगोपालाचारी जवाहर लाल नेहरू।
- 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स की भारत यात्रा के दौरान विरोध के क्रम में बंबई में कुछ हिंसक घटनाएँ हुई।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR